

त्नेन मुखमावृत्य Çāk. 69, 11. अर्धयर्धमित्वाकुचमूर्धोऽनं पर्वतस्य सा पार्श्वे न्य-
त्रसदावृत्य R. 2, 98, 30 (107, 18 GORR.). योगतारकामावृणोति वृषया VARĀH.
BRH. S. 24, 34. वस्त्रो मण्डपमावृणोति 33, 26. नीलजीमूतसंघातैः सर्वमम्बर-
मावृणोत् MBH. 1, 1296. 1134. आवृणोन्मो मन्त्राशरैः 3, 11959. धाराः — आ-
वृण्वन्सर्वतो व्योम 12136. R. GORR. 2, 63, 14. खमावन्ने लोहितप्राशनैः खगैः
MBH. 4, 1715. KATHĀS. 33, 137. आवृण्वर्जलदा व्योम MBH. 3, 7238. व्योमावृत्य
7194. तमसा लोकमावृत्य 1, 4232. 1105. 1152. 3550. R. 2, 92, 36. R. GORR.
2, 102, 16. 5, 36, 8. 10. BHĀG. P. 1, 7, 30. वरीतुमिवाकाशम् BHATT. 9, 24.
धूमनात्रियते वक्रियर्धदार्शो मलेन च BHĀG. 3, 38. verstecken, verbergen:
वृत्तैरात्मानमावृत्य R. 4, 12, 12. 13, 28. Çāk. 40, 21. आवृणोदात्मनो रन्धम्
RAGH. 17, 61. व्यान्नेनागतमावृणोति कसितम् Spr. 396. BĀLAB. 13. पन्थानम्,
मार्गम् einen Wey versperren: आवृत्य R. 1, 26, 28. 2, 28, 20. 3, 74, 19.
7, 23, 1, 11. MBH. 3, 12222. RAGH. 7, 28. 12. 28. आवृण्वतो लोचनमार्गम् 39.
द्वारम् ein Thor besetzen R. 4, 61, 39. 5, 7, 7. 6, 6, 11. 13, 12. 17, 16. fg. अग्नि-
शालाम् besetzen, in Beschlag nehmen KATHĀS. 72, 158. einsperren in (loc.):
यातनादेह आवृत्य BHĀG. P. 3, 30, 21. umgeben: कावेरीमावृत्य मलयो गि-
रिः R. 4, 41, 25. erfüllen: सर्वमावृत्य तिष्ठति ÇVETĀÇV. UP. 3, 16 (= BHĀG.
13, 13). MĀRK. P. 43, 56. BHĀG. P. 8, 24, 21. तेषां तु रुदतां शब्दः खमावृत्य
समततः R. GORR. 2, 111, 39. य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावृषी M.
2, 144. महीमावृत्य यशः R. 6, 104, 22. नात्युच्चैः स्थित आकाशे भूमिमावृत्य
so v. a. berührend 13. erfüllen (einen Wunsch): कुविद्वसुभिः काममाव-
रुत् RV. 1, 143, 6. abwehren: आवन्ने मुषली तरुम् BHATT. 14, 109. — आ-
वृणोति MBH. 12, 4010 wohl fehlerhaft für अवावृणोति. आवृत्य परिक्रमम्
M. 3, 214 fehlerhaft für आवृत्परिक्रमम्. — आवृत्य bedeckt, umhüllt, um-
geben, verhüllt, verlorgen AK. 3, 2, 40. H. 1476. तर्विषीभिः RV. 1, 31, 2.
33, 8. रजसा 164, 14. युञ्जेभिः 8, 26, 13. तृणैः AV. 9, 3, 17. तमसा 10, 1, 30.
2, 29. 31. 8, 43. 12, 1, 52. प्रजापतेरावृत्तो ब्रह्मणा वर्मणा 17, 1, 27. ÇAT. BR.
10, 6, 5, 1. 14, 5, 5, 18. आवृतास्तत्र तिष्ठति पितरः ĀÇV. GRH. 4, 7, 16. —
द्विपिचर्मावृते रथे bedeckt, bekleidet, bezogen AK. 2, 8, 2, 21. fg. हेमवर्णा-
म्बरावृत R. 1, 34, 22. Spr. 1210. चर्मावृतेव भूः 3206. वृत्तगुल्मावृत M. 7,
192. MBH. 3, 2404. R. 2, 56, 11. VARĀH. BRH. S. 44, 8. 54, 119. दीर्घलोम-
भिरावृतः PAÑĀR. 1, 6, 7. (नभः) प्रकृतत्रताराभिरावृतम् R. GORR. 1, 36,
16. क्षतत्रिभुभिः 3, 67, 8. कमिकुलशतैरावृततनुः Spr. 729. त्रणावृत R.
4, 39, 19. आवृतसर्वाङ्गा वराङ्गैः KATHĀS. 17, 147. महीं राष्ट्रवात्ताम् R. 2,
40, 12. उल्बावृते गर्भः umhüllt KHĀND. UP. 5, 9, 1. BHĀG. 3, 38. BHĀG. P.
3, 31, 8. 4, 22, 37. वदनं हृत्त्रेणा verdeckt, verhüllt R. 2, 26, 10. तृणैः कूपः
3, 32, 15. 4, 16, 17. BHĀG. P. 3, 31, 40. चतुस्तिमिरपटलैः Spr. 4965. तम-
सा लोकः MBH. 3, 8779. R. 2, 63, 17. KATHĀS. 47, 50. तुषारेण सूर्यप्रभा R.
GORR. 1, 30, 16. त्रलपटलैर्नभस्तलम् HIT. 80, 15. VARĀH. BRH. S. 24, 36.
32, 13. 43, 65. BHĀG. 3, 39. Spr. 3844. NAISH. 22, 41. VEDĀNTAS. (Allah.)
No. 38. fg. अनावृता un verhüllt M. 4, 44. ऋदिनीं पर्वतावृताम् unringt,
umgeben R. GORR. 2, 73, 5. शैलस्य पादे सलिलावृते R. SCHL. 2, 36, 15. ता-
रभिरुपतिः BHĀG. P. 3, 23, 38. भुजगावृत्तदेहा VARĀH. BRH. 27 (23), 23.
सखिगणावृता MBH. 3, 2095. R. 2, 14, 29. KATHĀS. 23, 7. PAÑĀT. 130, 20.
मृगी अभिः R. 3, 61, 4. ग्राम, वेष्टम् umschlossen, mit einer Mauer u. s. w.
umgeben M. 4, 73. geschlossen: वेष्टम् PAÑĀR. 3, 13, 47. RĀGA-TAR. 3,
235. पुरद्वार R. 2, 88, 19. DĀMPATĪ. 39. द्वारस्यावृत्तत्वात् PAÑĀT. 193, 18.
राजधानी R. 2, 88, 20. किमर्थमावृता लोका ममेते für mich verschlossen

MBH. 1, 8339. निर्धनेन ममेकेन कामकेनावृतं गृहम् besetzt, in Beschlag
genommen KATHĀS. 12, 99. gefungen gehalten 72, 158. BHĀG. P. 3, 31, 13.
8, 2, 31. अनावृताः किल पुरा स्त्रिय आसन् nicht eingeschlossen, frei, sui
juris MBH. 1, 4719. 4729. 3, 1858. BHĀG. P. 4, 20, 7. अनावृतदम् offen,
frei KATHĀS. 34, 197. अनावृतकथ R. GORR. 2, 1, 8. अर्थार्थिकज्ञानावृत erfüllt,
bewohnt M. 4, 61. VARĀH. BRH. S. 3, 78. मूषकैः परिधावद्भिरावृतानि वे-
ष्टमानि R. 2, 33, 19. वेतालैः श्मशानम् KATHĀS. 12, 48. सफेनलालावृतवक्र-
संपुट voll von RT. 1, 21. येनावृतं नित्यमिदं हि सर्वम् erfüllt von ÇVETĀÇV.
UP. 6, 2. BHĀG. P. 2, 6, 15. तेषामहिम्ना RAGH. 18, 39. आवृते हृदये राज्ञो
गाढया भोगतृष्णया KATHĀS. 40, 55. शैकैर्बुद्धिभिः R. 2, 72, 26. 73, 18. 4, 27,
9. ब्रह्मकृत्या behaftet mit dem Verbrechen eines Brahmanenmordes 7,
86, 8. तैरेव भूतैः versehen mit (Gegens. परित्यक्त) M. 12, 20. सलिलोप-
स्रवैरासीत्पुनरेवावृता नितिः heimgesucht von RĀGA-TAR. 3, 70. आवृत m.
Bez. einer Mischlingskaste, der Sohn eines Brahmanen und einer Ugrā
M. 10, 15. — Vgl. आवरणा, आवृति, इरावार. — caus. 1) bedecken BHĀG.
P. 5, 17, 4. verhüllen, verstecken: आवार्य गुल्मैरात्मानम् MBH. 3, 2370.
वृत्तेणावार्य (sc. आत्मानम्) R. 3, 67, 5. erfüllen: अथाकाशे मन्त्रान् शब्दः
प्राडरासीद्भयानकः । आवार्य गगनं मेघो यथा प्रावृषि दृश्यते ॥ R. 1, 32, 11.
— 2) abhalten, zurückhalten, abwehren: तं बाणमयं वर्षं शरैरावार्यं सर्वतः
MBH. 1, 4102. तमावार्यं बाहुना बाहुशालिनम् 2, 2431. 4, 469. 1508. 3,
5829. 7, 3131 (3123 liest die ed. Bomb. अभिहारयत्सु st. आवारयत्सु).
hemmen: सारदारुभिर्यां संपातमावारयेत् VARĀH. BRH. S. 34, 118.

— अया (eigentlich nur ein gedehntes अय, wie auch अपि und अभि im
Veda vor वर ihren Schlussvocal verlängern); vgl. RV. PRĀT. 9, 2. öffnen:
अवावृणवानीः LĀṬI. 2, 10, 20. मुखसपावृणु BH. ĀR. UP. 5, 13 = ĪÇOP. 13 =
MAITRAUP. 6, 35. लोकद्वारमपावार्णु KHĀND. UP. 2, 24, 4. द्वारमपावरीतुम् Verz.
d. Oxf. H. 239, a, 12. मञ्जुषां तामपावृत्य R. 1, 67, 13 (69, 14 GORR.). offenbar
machen, enthüllen: उत्थितस्य शयनं विलासिनस्तस्य विधमरतान्यपावृ-
णोत् RAGH. 19, 25. अवावृणोति st. प्रावृणोति und आवृणोति möchten
wir lesen in der Stelle: यो ऽपावृणोत्यवितथेन वर्णान् (कर्मणा an einer
Stelle) MBH. 5, 1692. 12, 4010. अवावृत (s. auch bes.) geöffnet, offen:
आस्य MBH. 5, 282. मुख R. 3, 43, 18. कर्णोरन्ध्र BHĀG. P. 3, 22, 7. द्वार MBH.
4, 228. HARIV. 2627. R. GORR. 2, 96, 22. 3, 43, 40. 43, 3. 4, 5, 22. KATHĀS.
32, 83. 108, 45. Spr. 4663. BHĀG. P. 3, 23, 20. 6, 9, 32. क्वार KATHĀS. 81,
97. राजधानी R. GORR. 2, 96, 23. चन्द्रपथ HARIV. 2623. धर्मपथ 14021. दिशः
MBH. 13, 2091. लोकाः BHĀG. P. 3, 9, 30. 9, 3, 30. पयस् offen so v. a. un-
bedeckt MBH. 12, 8391. HARIV. 3413. geoffenbart, enthüllt: ऋतु BHĀG. P.
3, 9, 15. 4, 3, 23. — Vgl. unter अय, अवावृत fg.

— उपा, ऽवृधि ved. P. 6, 4, 102. Schol. उपावत verdeckt so v. a. be-
schattet (nach dem Comm.) HARIV. 6347 nach der Lesart der neueren
Ausg., उपावृत्त ed. Calc.

— समुपा öffnen: द्वाराणि समुपावृणवन् R. 5, 13, 10. fehlerhaft für स-
मपा; अयवृणवन्श्च द्वाराणि ed. Bomb. 5, 12, 16.

— पर्या, ऽवृत verhüllt, verdeckt MĀLATĪM. 90, 7.

— प्रा (eigentlich ein gedehntes प्र; RV. schreibt im Padap. stets
प्रावृत ohne Trennung; vgl. VS. PRĀT. 3, 37 und unter अपि, अभि, अया)
bedecken: त्वचा प्रावृत्य सर्वम् AV. 11, 8, 15. प्रावारिषुः BHATT. 9, 25. umthun,
anlegen (ein Kleid u. s. w.): तद्वस्त्रमर्जः प्रावृणोत् MBH. 3, 2997. MĀRĀN. 22,